# श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये — सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

**सम्यग्ज्ञान विशारद** Answer-Sheet

अभ्यासक्रम क्रं. : 9

## ◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

2021 - 22

ऐनरोलमेन्ट नंबर ________ शहर ________

विद्यार्थी का नाम ________

**प्रश्न-१ रिक्त स्थान**

| | |
|---|---|
| (१) | भव्य जीव |
| (२) | श्रीशय्यंभवसूरि |
| (३) | दावानल |
| (४) | चारित्र |
| (५) | सास्वादन |
| (६) | क्षणभंगुरता |
| (७) | संयमनिर्वाह |
| (८) | मनोमंथन |
| (९) | मांगलिक |
| (१०) | अपकाय |
| (११) | ज्ञानसाधना |
| (१२) | अभंग |
| (१३) | अनाभोगिक |
| (१४) | असारता |
| (१५) | अनादिसान्त |
| (१६) | मोहनिद्रा |
| (१७) | अध्यात्म |
| (१८) | मुक्तिपद |
| (१९) | सुक्ष्मदृष्टि |
| (२०) | सुवर्णमय |

**प्रश्न-२ एक ही शब्द में**

| | |
|---|---|
| (१) | संसारवृद्धि |
| (२) | मोहनिय कर्म |
| (३) | जीवविचार, नवतत्व |
| (४) | आत्म-समाधि |
| (५) | सिध्धमेरु (पार्श्वनाथ) |
| (६) | अनभिग्रहिक मिथ्यात्व |
| (७) | श्री प्रभवस्वामी |
| (८) | संयम की साधना |
| (९) | सास्वादन गुणस्थान |
| (१०) | श्रीशांतीनाथप्रभुकीमूर्ति के प्रभाव से |
| (११) | मोक्ष की |
| (१२) | मिथ्यात्वमोहनिय कर्म के उपशांत होने से |
| (१३) | दशवैकालिक सुत्र |
| (१४) | संघयण / बल |
| (१५) | अवस्वापिनी विद्या |
| (१६) | कुदेव |
| (१७) | तिर्यंच |
| (१८) | मे करूंगा |
| (१९) | स्थिति |
| (२०) | टाला है |
| (२१) | सांशयिक |
| (२२) | जिनका श्रेष्ठ वैभव |
| (२३) | देशविरति |
| (२४) | प्राप्त हुआ है |
| (२५) | आवलिका |
| (२६) | सुखी किया है |
| (२७) | दग्ध हुए |
| (२८) | अयोगीकेवली गुणस्थान |
| (२९) | खेद पाये हुए |
| (३०) | उपयोग |
| (३१) | एकेन्द्रिय |

Note: the second column of प्रश्न-२ on the sheet is numbered (५) to (२०); in the table above it continues the numbering as (१६)–(३१) in order: (५) कुदेव, (६) तिर्यंच, (७) मे करूंगा, (८) स्थिति, (९) टाला है, (१०) सांशयिक, (११) जिनका श्रेष्ठ वैभव, (१२) देशविरति, (१३) प्राप्त हुआ है, (१४) आवलिका, (१५) सुखी किया है, (१६) दग्ध हुए, (१७) अयोगीकेवली गुणस्थान, (१८) खेद पाये हुए, (१९) उपयोग, (२०) एकेन्द्रिय.

**प्रश्न-३ शब्दार्थ**

| | |
|---|---|
| (१) | अवगाहना |
| (२) | ~~लूसहै~~ लुटाई |
| (३) | क्षोभ पाये हुए |
| (४) | सिद्धान्त |

**प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ**

| | | | |
|---|---|---|---|
| (१) | ८ | (६) | १ |
| (२) | १० | (७) | 3 |
| (३) | ९ | (८) | ५ |
| (४) | ७ | (९) | ४ |
| (५) | ६ | (१०) | 2 |

**प्रश्न-५ संख्या में जवाब**

| | |
|---|---|
| (१) | ३८७ |
| (२) | ९४८ |
| (३) | ५ |
| (४) | 3 |
| (५) | वि.स. पूर्व ४७० वर्ष |
| (६) | ९ |
| (७) | १० |
| (८) | ५ |
| (९) | ६४ |
| (१०) | ६२ |

| | प्रश्न-६ ✓ या × | | प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर |
|---|---|---|---|
| (१) | × | (१) | ११ |
| (२) | ✓ | (२) | १९ |
| (३) | ✓ | (३) | 23 |
| (४) | × | (४) | ९ |
| (५) | ✓ | (५) | १३ |
| (६) | × | (६) | ८ |
| (७) | × | (७) | 22 |
| (८) | ✓ | (८) | ९ |
| (९) | × | (९) | १३ |
| (१०) | ✓ | (१०) | 20 |

| प्रश्न-१ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-२ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-३ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-४ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-५ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-६ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-७ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-८ मिले हुए गुण | = | कुल गुण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | | | | |

रीमार्क ________ जांचनेवाले की सही ________

प्रश्न - ८

१. दशवैकालिक सूत्र सारे सूत्रों का सार है, मुनिजीवन की स्थिरता के लिये आचार पालन का ज्ञान इस सूत्र में समाया हुआ है। श्रीशय्यंभवसूरि ने इस सूत्र की रचना अपने पुत्र की आयु अल्प है ऐसा जानकर मनकमुनि के जीवनोद्धार के लिये चौदहपूर्व में से उद्धार करके श्रीदशवैकालिक सूत्र की रचना की थी। कार्य सिद्ध होने के पश्चात श्री दशवैकालिक सूत्र को पूर्व में मिला देने की भावना कर रहे शय्यंभवसूरि को श्री श्रमणसंघ ने निवेदन कर। इस पांचवे आरे में अल्प आयुष्य वाले और अल्प बुद्धि वाले मुनिवरों को उपयोगी होगा इसलिये इस सूत्र को कायमरखने के लिए कहा।

२. जंबूकुमार अमृत से भी अधिक मीठी मधुर परंतु वैराग्यमय वाणी से आठों कन्याओं को प्रतिबोधित करते है। संसार की भयानकता और असारता समझाते है। संसार दुःखमय, पापमय एवं स्वार्थमय है इसका ऐसा अद्भुत वर्णन करते है की जो सुनकर रात्रि में चोरी करने आये विंध्यराजा के पुत्र प्रभव और पांचसौ चोर भी प्रतिबोध पाते है।

३. हे प्रभु! जो पुरुष इस लोक में आपके नाम के अक्षर का प्रगट सिद्धमंत्र [पार्श्वनाथ ऐसा मंत्र] से बंधे हुए है, वे जहर के विषम वेग को दूर टाल कर, विलासवाले फन अथवा भयंकर चपल और लाल नेत्रवाले, चंचल जीभवाले, नये बादल जैसे और भयंकर आकार वाले उग्र सर्प को एक कीडे जैसा मानते है। ~~है नाथ~~

४. गोचरी वक्त की सावधानीया धुंध कोहरा हो बरसात हो ओले हो, ये सब पानी के ही विविध बिंदु मे कण मे असंख्य एकेन्द्रिय अपकाय जीव है। इन जीवो अभयदान साधु देते है। साधु जब बरसात धिमी पड जीव विराधना की संभावना कम हो दी गरम कामली ओढकर नजदीक के घरो मे से उपयोग पूर्वक गोचरी वोहराकर आवे साधु समाधी टिकाने रखने के लिए अपवाद मार्ग बताया है। मुंबई जैसी नगरीयो मे, 3-3, 4-4, दिन मेघराज बरसते है तो, श्रावको को टिफिन मे गोचरी वोहराने का व्यवहार हाल मे प्रचलित है।

५. जिव जिसके कारण दंडित होते है, वह दंडक कर्मो के कारण जीव जिसमें दुःखी हो, दंडित हो उसे दंडक कहते है। आत्मा तो सदा आनंद में रहने के स्वभाववाला है, फिर भी उसे विविध गति, जाति के रुप में दंडित होना पडता है। कभी एकेन्द्रीय, विकलेन्द्रीय, कभी त्रस मे स्थावर में, कभी नरक में तो निगोद में इतनाही नहि मनुष्य बनना भी दंड ही है। जीव विचारमें जीव के ५६३ भेदो का २४ दंडक में समावेश करने में आता है।